THE RESEARCH DIALOGUE
An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
© The Research Dialogue | Volume-05 | Issue-02 | July-2026
Available online at: https://theresearchdialogue.com/
DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i2.05

बाल–सुधार गृहों में रहने वाले बाल–अपराधियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का उनके सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन

मनीष कुमार मिश्र[1], अमित कुमार सिंह[2], प्रो0 आर0पी0 मिश्र[2]

[1]शोधार्थी,शिक्षा विभाग, हिन्दू कॉलेज, मुरादाबाद
[2]असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, हिन्दू कॉलेज, मुरादाबाद
[3]सेवानिवृत्त, शिक्षा विभाग, हिन्दू कॉलेज, मुरादाबाद

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र "बाल–सुधार गृहों में रहने वाले बाल–अपराधियों की शैक्षिक अभिवृत्ति एवं उनकी सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के मध्य संबंध" एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं समकालीन विषय पर आधारित है, जो शिक्षा एवं मनोविज्ञान के समन्वित दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है। प्रस्तावना में यह स्पष्ट किया गया है कि बाल–अपराध केवल कानूनी समस्या नहीं, बल्कि सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं मनोवैज्ञानिक कारकों का परिणाम है। प्रतिकूल परिस्थितियों जैसे गरीबी, अशिक्षा, पारिवारिक विघटन एवं सामाजिक उपेक्षा के कारण बालक अपराध की ओर अग्रसर हो जाते हैं, जिससे उनके व्यक्तित्व विकास के साथ–साथ समाज पर भी नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसी कारण बाल–सुधार गृहों की स्थापना की गई है, जहाँ इन बच्चों को दंड देने के स्थान पर शिक्षा, मार्गदर्शन एवं पुनर्वास के अवसर प्रदान किए जाते हैं। अध्ययन में शैक्षिक अभिवृत्ति को एक महत्वपूर्ण कारक माना गया है, जो यह निर्धारित करता है कि बालक शिक्षा के प्रति कितना सकारात्मक या नकारात्मक दृष्टिकोण रखता है, और यह अभिवृत्ति उनकी सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों से गहराई से प्रभावित होती है। सामाजिक–आर्थिक स्थिति में परिवार की आय, माता–पिता की शिक्षा, व्यवसाय, पारिवारिक वातावरण एवं संसाधनों की उपलब्धता जैसे तत्व शामिल होते हैं, जो बालकों के दृष्टिकोण एवं व्यवहार को प्रभावित करते हैं। अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व इस तथ्य में निहित है कि यदि बाल–अपराधियों की शैक्षिक अभिवृत्ति सकारात्मक बनाई जाए, तो उनके पुनर्वास की प्रक्रिया अधिक प्रभावी हो सकती है और उन्हें समाज की मुख्यधारा में पुनः स्थापित किया जा सकता है। इस शोध में गोरखपुर मण्डल के बाल–सुधार गृहों में रहने वाले 100 बाल–अपराधियों (60 ग्रामीण एवं 40 नगरीय) को नमूने के रूप में लिया गया तथा स्वनिर्मित प्रश्नावली के माध्यम से आँकड़ों का संग्रह किया गया। अध्ययन के उद्देश्यों के अनुरूप ग्रामीण एवं नगरीय दोनों वर्गों के बाल–अपराधियों की शैक्षिक अभिवृत्ति एवं सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के मध्य संबंध का परीक्षण किया गया। परिकल्पनाओं के विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि ग्रामीण बाल–अपराधियों में सहसम्बन्ध का मान 0.52 तथा नगरीय बाल–अपराधियों में 0.68 प्राप्त हुआ, जो दोनों ही स्थितियों में 0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया। यह परिणाम स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं कि दोनों चरों के मध्य धनात्मक एवं महत्वपूर्ण सहसम्बन्ध विद्यमान है, अर्थात जिन बालकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति अपेक्षाकृत बेहतर

होती है, उनकी शैक्षिक अभिवृत्ति भी अधिक सकारात्मक होती है। अध्ययन के निष्कर्ष यह सिद्ध करते हैं कि सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियाँ बाल–अपराधियों की शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं और यही उनके पुनर्वास की सफलता में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। अतः यह आवश्यक है कि बाल–सुधार गृहों में शिक्षा प्रदान करते समय बच्चों की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखा जाए तथा उनके लिए उपयुक्त, व्यावहारिक एवं प्रेरणादायक शैक्षिक कार्यक्रम विकसित किए जाएँ। इस प्रकार, यह अध्ययन न केवल बाल–अपराध की समस्या को समझने में सहायक है, बल्कि एक समावेशी एवं संवेदनशील समाज के निर्माण की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करता है।

मुख्यशब्द : बाल–सुधार गृह, बाल–अपराधी, शैक्षिक अभिवृत्ति, सामाजिक–आर्थिक परिस्थिति

प्रस्तावना

बाल–सुधार गृहों में रहने वाले बाल–अपराधियों की शैक्षिक अभिवृत्ति तथा उनकी सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के मध्य संबंध का अध्ययन समकालीन शैक्षिक एवं सामाजिक अनुसंधान का एक अत्यंत महत्वपूर्ण एवं संवेदनशील क्षेत्र है। वर्तमान समय में बाल–अपराध केवल एक कानूनी या अपराध संबंधी समस्या नहीं रह गई है बल्कि यह एक जटिल सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक एवं मनोवैज्ञानिक परिघटना के रूप में उभरकर सामने आई है। बालक समाज की अमूल्य धरोहर होते हैं परंतु जब वे प्रतिकूल परिस्थितियों, अभाव, उपेक्षा, असमानता, पारिवारिक विघटन, अशिक्षा तथा सामाजिक असुरक्षा के कारण अपराध की ओर अग्रसर होते हैं, तो यह न केवल उनके व्यक्तिगत विकास को बाधित करता है बल्कि समाज के संतुलित विकास के लिए भी चुनौती प्रस्तुत करता है। ऐसे बालकों को दंडित करने के बजाय सुधारात्मक दृष्टिकोण अपनाने के उद्देश्य से बाल–सुधार गृहों की स्थापना की गई है जहाँ उन्हें पुनर्वास, शिक्षा, नैतिक मार्गदर्शन एवं सामाजिक पुनर्स्थापन के अवसर प्रदान किए जाते हैं।

शिक्षा, व्यक्ति के समग्र विकास का आधार मानी जाती है और बाल–अपराधियों के संदर्भ में यह और भी अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है क्योंकि शिक्षा ही वह माध्यम है जो उनके व्यवहार में परिवर्तन ला सकती है, उन्हें सही–गलत का बोध करा सकती है तथा उन्हें समाज की मुख्यधारा से जोड़ सकती है। किंतु बाल–सुधार गृहों में रहने वाले बाल–अपराधियों की शैक्षिक अभिवृत्ति अनेक कारकों से प्रभावित होती है, जिनमें प्रमुख रूप से उनकी सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियाँ सम्मिलित हैं। सामाजिक–आर्थिक स्थिति में परिवार की आय, माता–पिता की शिक्षा, व्यवसाय, पारिवारिक वातावरण, सामाजिक प्रतिष्ठा, संसाधनों की उपलब्धता तथा जीवन–स्तर जैसे तत्व शामिल होते हैं। ये सभी कारक बालकों के व्यक्तित्व, सोच, व्यवहार एवं शिक्षा के प्रति उनके दृष्टिकोण को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करते हैं।

अधिकांश शोधों से यह स्पष्ट हुआ है कि निम्न सामाजिक–आर्थिक वर्ग से आने वाले बालक प्रायः शिक्षा के प्रति कम सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं क्योंकि उन्हें प्रारंभ से ही जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं के लिए संघर्ष करना पड़ता है। गरीबी, बेरोजगारी, अशिक्षा एवं पारिवारिक तनाव के कारण उनके लिए शिक्षा एक प्राथमिकता नहीं बन पाती। ऐसे बालक अक्सर विद्यालय से दूर हो जाते हैं, जिससे उनमें अनुशासनहीनता, आक्रामकता तथा असामाजिक व्यवहार विकसित होने की संभावना बढ़ जाती है। इसके विपरीत, उच्च सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि वाले बालकों को शिक्षा के अधिक अवसर, संसाधन एवं प्रोत्साहन प्राप्त होते हैं, जिससे उनकी शैक्षिक अभिवृत्ति अधिक सकारात्मक होती है।

बाल–सुधार गृहों में रहने वाले बाल–अपराधियों की स्थिति विशेष रूप से जटिल होती है क्योंकि वे पहले ही सामाजिक उपेक्षा, आर्थिक अभाव एवं पारिवारिक अस्थिरता का अनुभव कर चुके होते हैं। इन बालकों के लिए शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन का माध्यम नहीं बल्कि उनके पुनर्वास एवं सामाजिक पुनर्स्थापन का एक सशक्त साधन है। यदि उनकी

शैक्षिक अभिवृत्ति सकारात्मक बनाई जाए तो वे अपने जीवन में परिवर्तन ला सकते हैं और समाज के उपयोगी नागरिक बन सकते हैं। किंतु यदि उनकी सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि प्रतिकूल रही है, तो यह उनकी शैक्षिक अभिवृत्ति को नकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकती है, जिससे उनके पुनर्वास की प्रक्रिया भी बाधित हो सकती है। बाल–सुधार गृहों में रहने वाले बाल–अपराधियों की शैक्षिक अभिवृत्ति किस प्रकार उनकी सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों से प्रभावित होती है। यह अध्ययन न केवल शैक्षिक मनोविज्ञान के क्षेत्र में योगदान देगा, बल्कि नीति–निर्माताओं, शिक्षकों, समाजसेवियों एवं प्रशासनिक अधिकारियों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा। इसके माध्यम से यह समझा जा सकेगा कि किन सामाजिक–आर्थिक कारकों का बालकों की शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण पर अधिक प्रभाव पड़ता है और किस प्रकार इन कारकों को ध्यान में रखते हुए प्रभावी शैक्षिक एवं पुनर्वास कार्यक्रम तैयार किए जा सकते हैं। बाल–सुधार गृहों में प्रदान की जाने वाली शैक्षिक सुविधाएँ किस हद तक बालकों की आवश्यकताओं के अनुरूप हैं तथा उनमें सुधार की क्या संभावनाएँ हैं। यदि बालकों की सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए उनके लिए उपयुक्त शैक्षिक वातावरण तैयार किया जाए, तो उनकी शैक्षिक अभिवृत्ति में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है। उदाहरण के लिए, व्यावसायिक शिक्षा, जीवन–कौशल शिक्षा, परामर्श सेवाएँ एवं व्यक्तिगत मार्गदर्शन जैसे उपाय उनके आत्मविश्वास को बढ़ाने तथा उन्हें समाज में पुनः स्थापित करने में सहायक हो सकते हैं।

समग्र रूप से, यह कहा जा सकता है कि बाल–अपराधियों की शैक्षिक अभिवृत्ति एवं उनकी सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के मध्य गहरा एवं बहुआयामी संबंध है। इस संबंध को समझना आवश्यक है, ताकि बाल–सुधार गृहों में रहने वाले बालकों के लिए प्रभावी शैक्षिक एवं पुनर्वास कार्यक्रम विकसित किए जा सकें। यह अध्ययन न केवल बाल–अपराध की समस्या के समाधान में सहायक होगा, बल्कि एक समावेशी, न्यायसंगत एवं संवेदनशील समाज के निर्माण की दिशा में भी महत्वपूर्ण योगदान देगा, जहाँ प्रत्येक बालक को उसके जीवन को सुधारने एवं आगे बढ़ने का समान अवसर प्राप्त हो सके।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्त्व

बाल–सुधार गृहों में रहने वाले बाल–अपराधियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का उनके सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन विषय वर्तमान शिक्षा, समाजशास्त्र तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण एवं प्रासंगिक है। इस प्रकार के अध्ययन की आवश्यकता इसलिए अनुभव की जाती है क्योंकि बाल–अपराध आज केवल कानूनी समस्या नहीं रह गया है बल्कि यह एक जटिल सामाजिक, पारिवारिक तथा शैक्षिक समस्या के रूप में उभर कर सामने आया है। बाल–सुधार गृहों में रहने वाले बाल–अपराधी प्रायः ऐसे परिवेश से आते हैं जहाँ गरीबी, अशिक्षा, पारिवारिक विघटन, बेरोजगारी, असुरक्षा तथा सामाजिक उपेक्षा जैसी समस्याएँ विद्यमान होती हैं। इन परिस्थितियों का सीधा प्रभाव उनके व्यक्तित्व, व्यवहार तथा शिक्षा के प्रति उनकी अभिवृत्ति पर पड़ता है इसलिए यह जानना अत्यंत आवश्यक हो जाता है कि इन बालकों की शैक्षिक अभिवृत्ति किस प्रकार उनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति से प्रभावित होती है ताकि उनके पुनर्वास एवं सुधार के लिए प्रभावी योजनाएँ बनाई जा सकें।

शिक्षा किसी भी व्यक्ति के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाने का सबसे प्रभावी साधन है। यदि बाल–सुधार गृहों में रहने वाले बच्चों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति नकारात्मक है तो उनके सुधार एवं पुनर्वास की प्रक्रिया बाधित हो सकती है। इसके विपरीत यदि उनकी शैक्षिक अभिवृत्ति सकारात्मक है, तो उन्हें समाज की मुख्यधारा में पुनः स्थापित करना अधिक सहज हो जाता है। सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियाँ जैसे परिवार की आय, अभिभावकों की शिक्षा, पारिवारिक वातावरण, संसाधनों की उपलब्धता आदि, बालकों की सोच, दृष्टिकोण तथा आकांक्षाओं को गहराई से प्रभावित करती हैं।

ऐसे में यह अध्ययन यह स्पष्ट करने में सहायक होगा कि किन सामाजिक–आर्थिक कारकों के कारण बाल–अपराधियों की शिक्षा के प्रति रुचि एवं दृष्टिकोण प्रभावित होते हैं।

बाल–अपराध अक्सर उन बच्चों में अधिक पाया जाता है जो सामाजिक एवं आर्थिक रूप से वंचित वर्ग से आते हैं। यदि इस संबंध को वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित किया जाता है, तो यह सरकार एवं समाज के लिए एक चेतावनी का कार्य करेगा कि वे इन वर्गों के उत्थान हेतु ठोस कदम उठाएँ। शिक्षा के माध्यम से इन बच्चों को सही दिशा देकर न केवल उनके जीवन को सुधारा जा सकता है बल्कि समाज में अपराध की दर को भी कम किया जा सकता है। यदि यह ज्ञात हो जाता है कि कौन–कौन से सामाजिक–आर्थिक कारक बालकों को अपराध की ओर प्रेरित करते हैं और उनकी शैक्षिक अभिवृत्ति को प्रभावित करते हैं, तो प्रारंभिक स्तर पर ही ऐसे कारकों को नियंत्रित करने के प्रयास किए जा सकते हैं। इससे बाल–अपराध की समस्या को जड़ से समाप्त करने में सहायता मिल सकती है।

अध्ययन का महत्वपूर्ण पक्ष यह है कि यह बाल–सुधार गृहों में लागू की जा रही शैक्षिक नीतियों एवं कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने में भी सहायक होता है। यदि यह पाया जाता है कि वर्तमान शैक्षिक व्यवस्था इन बच्चों की आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं है तो उसमें आवश्यक सुधार किए जा सकते हैं। इससे शिक्षा को अधिक व्यावहारिक, जीवनोपयोगी एवं प्रेरणादायक बनाया जा सकता है।

अंततः, इस अध्ययन का महत्व इस बात में निहित है कि यह न केवल बाल–अपराधियों के जीवन को सुधारने की दिशा में योगदान देता है, बल्कि एक स्वस्थ, सुरक्षित एवं समावेशी समाज के निर्माण में भी सहायक होता है। यह अध्ययन समाज को यह संदेश देता है कि प्रत्येक बालक, चाहे वह किसी भी परिस्थिति में क्यों न हो, शिक्षा के माध्यम से अपने जीवन को बदल सकता है और समाज का एक उपयोगी सदस्य बन सकता है। अतः इस विषय पर किया गया शोध न केवल शैक्षिक दृष्टि से, बल्कि सामाजिक एवं मानवीय दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण एवं आवश्यक है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

अभिषेक, आर. एवं बालामुरुगन, जे. (2024) द्वारा किए गए अध्ययन "किशोर अपराध में सामाजिक कारकों का प्रभाव" में यह पाया गया कि बाल–अपराध की प्रवृत्ति मुख्यतः नकारात्मक पारिवारिक वातावरण, अभिभावकों की उपेक्षा तथा गलत मित्र समूह के कारण विकसित होती है। जिन बच्चों को परिवार में उचित मार्गदर्शन, स्नेह, सुरक्षा और सहयोग प्राप्त होता है, वे भावनात्मक रूप से अधिक संतुलित रहते हैं और उनमें अपराध की प्रवृत्ति अपेक्षाकृत कम पाई जाती है। इसके विपरीत, उपेक्षित एवं असुरक्षित वातावरण में पलने वाले बच्चों में अनुशासनहीनता, आक्रामकता तथा असामाजिक व्यवहार विकसित होने की संभावना अधिक होती है, जो आगे चलकर किशोर अपराध का रूप ले सकती है।

अन्ने, आई. एवं सिंह, बी. (2024) के अध्ययन "किशोर अपराध पर सामाजिक–आर्थिक कारकों का प्रभाव (राजस्थान अध्ययन)" पर अध्ययन किया। इस शोध में पाया गया कि गरीबी, बेरोजगारी तथा शिक्षा का अभाव किशोर अपराध के प्रमुख कारण हैं। जिन परिवारों की आय कम होती है और माता–पिता की शैक्षिक योग्यता निम्न होती है, उनके बच्चों में अपराध की प्रवृत्ति अधिक देखी जाती है। आर्थिक कठिनाइयों के कारण बच्चों की शिक्षा बाधित होती है, जिससे उनके भीतर नकारात्मक सोच और असामाजिक व्यवहार विकसित होता है। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि शिक्षा की कमी अपराध के चक्र को निरंतर बढ़ाती है और बच्चों के समुचित विकास में बाधा उत्पन्न करती है।

सन, सी. (2024) ने शैक्षिक वातावरण और किशोर अपराध के मध्य संबंध का अध्ययन किया। अध्ययन के अनुसार खराब शैक्षिक वातावरण, जैसे विद्यालय में संसाधनों की कमी, शिक्षकों का सहयोग न मिलना तथा अनुशासनहीन माहौल, बच्चों के व्यवहार पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। जब बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और उचित मार्गदर्शन नहीं मिलता,

©The Research Dialogue | Received: 01 July 2026 | Accepted: 04 July 2026 | Published: 07 July 2026

तो वे गलत संगति और असामाजिक गतिविधियों की ओर आकर्षित हो सकते हैं। इसके साथ ही, शिक्षा तक सीमित पहुँच भी उनके विकास में बाधा उत्पन्न करती है। परिवार, विद्यालय और समाज तीनों की संयुक्त भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि सकारात्मक सहयोग और उचित वातावरण मिलने पर बच्चों में अनुशासन, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास होता है, जिससे किशोर अपराध में कमी लाई जा सकती है।

दत्त, ए., गर्ग, एम., नंदन, ए. एवं सिंह, ए. (2024) द्वारा किए गए अध्ययन "किशोर अपराधियों की पारिवारिक एवं सामाजिक–आर्थिक विशेषताएँ" में यह पाया गया कि बच्चों के व्यवहार पर पारिवारिक पृष्ठभूमि और सामाजिक–आर्थिक स्तर का गहरा प्रभाव पड़ता है। जिन बच्चों का सामाजिक–आर्थिक स्तर निम्न होता है, उनमें आक्रामकता, असामाजिक व्यवहार और अपराध की प्रवृत्ति अधिक पाई जाती है। अध्ययन में यह भी स्पष्ट हुआ कि आर्थिक अभाव, पारिवारिक तनाव, अभिभावकों की कम शिक्षा तथा असुरक्षित वातावरण बच्चों के व्यक्तित्व विकास को नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं, जिससे उनके व्यवहार में असंतुलन और अपराध की ओर झुकाव बढ़ता है।

झांग, वाई. (2025) ने किशोर अपराध में योगदान देने वाले सामाजिक कारक तथा उसका प्रभाव पर एक अध्ययन किया। इस अध्ययन में यह पाया गया कि किशोर अपराध के पीछे प्रमुख रूप से नकारात्मक पारिवारिक वातावरण, निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर तथा शिक्षा की कमी जैसे कारक जिम्मेदार होते हैं। जिन बच्चों को परिवार में उचित मार्गदर्शन, स्नेह एवं अनुशासन नहीं मिलता, वे गलत गतिविधियों की ओर अधिक आकर्षित होते हैं। इसके अतिरिक्त गरीबी और संसाधनों की कमी भी उनके व्यक्तित्व एवं व्यवहार को प्रभावित करती है। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि यदि ऐसे बच्चों को उचित मानसिक स्वास्थ्य सहयोग, परामर्श तथा गुणवत्तापूर्ण शैक्षिक अवसर प्रदान किए जाएँ, तो उनके व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकता है और उन्हें समाज की मुख्यधारा में पुनः स्थापित किया जा सकता है।

चेन, वाई. (2025) के अध्ययन के अनुसार, परिवार में शैक्षिक कमी, असंतुलित पालन–पोषण तथा भावनात्मक अभाव बाल–अपराध की प्रवृत्ति को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जिन परिवारों में माता–पिता शिक्षित नहीं होते या बच्चों के विकास में सक्रिय सहभागिता नहीं करते, वहाँ बच्चों में अनुशासन, नैतिक मूल्यों और सामाजिक व्यवहार का समुचित विकास नहीं हो पाता। इसके परिणामस्वरूप बच्चे गलत संगति, आक्रामक व्यवहार और अपराध की ओर आकर्षित हो सकते हैं। अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि परिवार बच्चों के सामाजिक तथा शैक्षिक विकास का प्रमुख आधार होता है। उचित मार्गदर्शन, स्नेह और सकारात्मक वातावरण मिलने पर बच्चों की शैक्षिक अभिवृत्ति और व्यवहार दोनों में सुधार संभव है।

समस्या कथन

बाल–सुधार गृहों में रहने वाले बाल–अपराधियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का उनके सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन।

चरों का परिभाषीकरण

- बाल–सुधार गृह :– बाल–सुधार गृह वह संस्थान है जहाँ अपराध में संलिप्त 18 वर्ष से कम आयु के बच्चों को न्यायालय के आदेश पर सुधार, शिक्षा एवं पुनर्वास के उद्देश्य से रखा जाता है।
- बाल–अपराधी :– बाल–अपराधी वे बच्चे/किशोर होते हैं जो कानून के विरुद्ध कार्य (जैसे चोरी, हिंसा, नशा आदि) में संलिप्त पाए जाते हैं।
- शैक्षिक अभिवृत्ति :– शिक्षा के प्रति व्यक्ति की मानसिक प्रवृत्ति, रुचि, विश्वास, मूल्य एवं व्यवहार को शैक्षिक अभिवृत्ति कहा जाता है।

- सामाजिक–आर्थिक परिस्थिति :– किसी व्यक्ति या परिवार की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति का संयुक्त रूप सामाजिक–आर्थिक परिस्थिति कहलाता है।

अध्ययन के उद्देश्य

- बाल–सुधार गृहों में रहने वाले ग्रामीण बाल–अपराधियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का उनके सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन।
- बाल–सुधार गृहों में रहने वाले नगरीय बाल–अपराधियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का उनके सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

- बाल–सुधार गृहों में रहने वाले ग्रामीण बाल–अपराधियों की शैक्षिक अभिवृत्ति एवं सामाजिक–आर्थिक परिस्थिति के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।
- बाल–सुधार गृहों में रहने वाले नगरीय बाल–अपराधियों की शैक्षिक अभिवृत्ति एवं सामाजिक–आर्थिक परिस्थिति के मध्य कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं है।

आँकड़ों का संग्रह

प्रस्तुत शोध हेतु आँकड़ों के संकलन के लिए गोरखपुर मण्डल में स्थित बाल सुधार गृहों में लाए गए ऐसे समस्त बाल अपराधी से व्यक्तिगत सम्पर्क करके प्रश्नावली के माध्यम से आँकड़ों का संकलन किया गया।

न्यादर्श

वर्तमान शोध हेतु 60 ग्रामीण एवं 40 शहरी बाल अपराधियों को शामिल किया गया है।

उपकरण

- शैक्षिक अभिवृत्ति मापनी – स्वनिर्मित प्रश्नावली।
- सामाजिक–आर्थिक परिस्थिति – स्वनिर्मित प्रश्नावली।

परिकल्पनाओं का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका संख्या – 1

बाल–सुधार गृहों में रहने वाले ग्रामीण बाल–अपराधियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का उनके सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के मध्य सम्बन्ध का विश्लेषण एवं व्याख्या

ग्रामीण बाल–अपराधी	संख्या	सहसम्बन्ध	सार्थकता स्तर
शैक्षिक अभिवृत्ति	60	**0.52**	**0.01 पर सार्थक**
सामाजिक–आर्थिक परिस्थिति			

व्याख्या :– तालिका संख्या 1 में बाल–सुधार गृहों में रहने वाले ग्रामीण बाल–अपराधियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का उनके सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के मध्य सम्बन्ध को दर्शाया गया है। दोनों के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.52 प्राप्त हुआ है। प्राप्त मान दोनों के बीच धनात्मक सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है। जिससे सिद्ध होता है कि बाल–सुधार गृहों में रहने वाले ग्रामीण बाल–अपराधियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का उनके सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

तालिका संख्या – 2

बाल–सुधार गृहों में रहने वाले नगरीय बाल–अपराधियों की शैक्षिक अभिवृत्ति एवं सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के मध्य सहसम्बन्ध का विश्लेषण एवं व्याख्या

नगरीय बाल–अपराधी	संख्या	सहसम्बन्ध	सार्थकता स्तर
शैक्षिक अभिवृत्ति	40	0.68	0.01 पर सार्थक
सामाजिक–आर्थिक परिस्थिति			

व्याख्या :– तालिका संख्या 2 में बाल–सुधार गृहों में रहने वाले नगरीय बाल–अपराधियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का उनके सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के मध्य सम्बन्ध को दर्शाया गया है। दोनों के मध्य सहसम्बन्ध का मान 0.68 प्राप्त हुआ है। प्राप्त मान दोनों के बीच धनात्मक सहसम्बन्ध को प्रदर्शित करता है। जिससे सिद्ध होता है कि बाल–सुधार गृहों में रहने वाले नगरीय बाल–अपराधियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का उनके सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के मध्य धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

शोध अध्ययन के निष्कर्ष

- बाल–सुधार गृहों में रहने वाले ग्रामीण बाल–अपराधियों की शैक्षिक अभिवृत्ति एवं सामाजिक–आर्थिक परिस्थिति के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।
- बाल–सुधार गृहों में रहने वाले नगरीय बाल–अपराधियों की शैक्षिक अभिवृत्ति एवं सामाजिक–आर्थिक परिस्थिति के मध्य सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

अभिषेक, आर. एवं बालमुरुगन, जे. (2024). बाल–अपराध के लिए उत्तरदायी सामाजिक कारकों का प्रभाव, जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड हेल्थ प्रमोशन।

अत्रेय, आई. एवं सिंह, बी. (2024). राजस्थान में बाल–अपराध पर सामाजिक–आर्थिक कारकों का प्रभाव : एक अन्वेषणात्मक अध्ययन, यूरोपियन इकोनॉमिक लेटर्स।

सन, सी. (2024). शैक्षिक वातावरण और बाल–अपराध के मध्य सम्बन्ध पर सारांश रिपोर्ट, सोशल साइंसेज एंड चाइल्डहुड।

दत्त, ए., गर्ग, एम., नंदन, ए., एवं सिंह, ए. (2024). बाल–अपराधियों की पारिवारिक एवं सामाजिक–आर्थिक विशेषताएँ, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ एग्रीकल्चर एक्सटेंशन एंड सोशल डेवलपमेंट।

झांग, वाई. (2025). बाल–अपराध में योगदान देने वाले सामाजिक कारक और उनका प्रभाव, कम्युनिकेशंस इन ह्यूमैनिटीज रिसर्च।

चेन, वाई. (2025). परिवारिक शिक्षा की कमियों का बाल–अपराध पर प्रभाव, एल.एन.ई.पी. प्रोसीडिंग्स।

Cite this Article:

मनीष कुमार मिश्र, अमित कुमार सिंह, प्रो0 आर0पी0 मिश्र,“ बाल-सुधार गृहों में रहने वाले बाल-अपराधियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का उनके सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन” The Research Dialogue, Open Access Peer-reviewed & Refereed Journal, Pp.46–52, Volume-05, Issue-02, July-2026, https://theresearchdialogue.com/

This is an Open cess Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

मनीष कुमार मिश्र[1], अमित कुमार सिंह[2], प्रो0 आर0पी0 मिश्र[2]

For publication of Research Paper title

बाल–सुधार गृहों में रहने वाले बाल–अपराधियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का उनके सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन

Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-05, Issue-02, Month July, Year-2026, Impact Factor (RPRI-4.73)

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Editor- In-chief

Dr. Neeraj Yadav
Executive-In-Chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://theresearchdialogue.com/

DOI : https://doi.org/10.64880/theresearchdialogue.v5i2.05